Page I

Page No:
Date:

MA Semester II

Paper 5, unit III

Topic- Development of Concept: Formation or attainment of Concepts

प्रत्यय का विकास या निर्माण या प्राप्ति

प्रत्यय का विकास, निर्माण या प्राप्ति में वस्तुओं की अनेकानेक विभिन्नताओं की अपेक्षा करते हुए उनमें कार्यात्मक समानता या समरूपता की विशेषता की पहचान करना आवश्यक होता है। इस पहचान में भाषा का महत्व अत्यधिक होता है क्योंकी भाषा से वस्तुओं या घटनाओं के वर्ग का बोध होता है जैसे 'मनुष्य' एक शब्द है जिससे गोरा-काला, सुंदर-कुरूप, नाटा-लंबा प्राणियों का बोध होता है इसी प्रकार 'पशु' एक शब्द है जिससे, गाय, बैल, कुत्ता, भैंस आदि जानवरों का बोध होता है। यहाँ स्पष्ट है कि शब्द प्रतीक (Symbol) के रूप में प्रत्यय का काम करता है

प्रत्यय की प्राप्ति अथवा शिक्षण में पृथक्करण की प्रक्रिया का होना आवश्यक है पृथक्करण से तात्पर्य वस्तुओं या घटनाओं में विद्यमान सर्वनिष्ठ विशेषता को पृथक करने से है जब सर्वनिष्ठ विशेषता को पृथक कर लिया जाता है, तो प्रत्यय की प्राप्ति अर्थात निर्माण हो जाता है।

प्रत्यय को सीखने में सामान्यीकरण (Generalization) तथा विभेदीकरण (Discrimination) दो प्रकार के मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं हैं।

सामान्यीकरण में जब प्राणी किसी वस्तु के प्रत्यय को सीखता है तो वह उस वस्तु के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया को दूसरी वस्तुओं के प्रति भी व्यक्त करता है जैसे कि प्रत्यय को सीखते हुए एक बच्चा कुत्ता, बिल्ली आदि पशुओं को भी बघुआ कहकर पुकार सकता है। विभेदीकरण (discrimination) द्वारा प्राणी भिन्न-भिन्न वस्तुओं के अंतरों को जान सकता है वह बच्चा बाद में चलकर कुत्ता, बंदर, बिल्ली आदि पशुओं के बीच अंतर को समझने लगता है। इस अंतर के समझने के पश्चात उसमें सही प्रत्यय का विकास होता है।

प्रत्यय विकास के संबद्ध दो पहलू पहचान (identification) तथा प्रत्याशा (anticipation) होते हैं।

1. पहचान के द्वारा वस्तुओं को किसी वर्गविशेष में रखा जाता है जैसे भैंस, चौपाया, स्तनधारी आदि किसी वस्तु को किसी विशिष्ट वर्ग के सदस्य के रूप में पहचान करने के फलस्वरूप उस वस्तु की उस वर्गविशेष के साथ identity (तादात्म्य) के बारे में अनिश्चितता नहीं रह जाती है।

प्रत्यय का दूसरा पक्ष प्रत्याशा (anticipation) है इसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि यदि कोई वस्तु किसी वर्गविशेष की है तो उसमें अमुक-अमुक विशेषताएँ भी होंगी। जैसे जब हम किसी पशु को हाथी के वर्ग में रखते हैं तो यह भी प्रत्याशा करते हैं कि वह पशु एक विशालकाय तथा अति शक्तिशाली होगा। उसके लम्बे सूँड होंगे

मोटे-मोटे पेड़ होंगे, सूप के समान या कोन होंगे तथा उसपर सवारी की जा सकती है। इसी प्रकार यदि कोई डॉक्टर किसी रोगी की जाँच कर यह पता लगाता है कि उसे टायफाइड हुआ है तब डॉक्टर यह भी प्रत्याशा करने लगता है कि उसके रोग में कौन-कौन से लक्षण होंगे और किस प्रकार की चिकित्सा से तथा कितने समय में रोगी का रोग से मुक्ति मिलेगा।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है कि प्रत्यय के विकास में वस्तुविशेष की परिभाषीय विशेषता (critical) के आधार पर वर्गविशेष में वर्गीकृत किया जाता है जिसे प्रत्यय कहते हैं। तथा उसकी विभिन्न संभावित विशेषताओं की प्रत्याशा भी की जाती है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara.